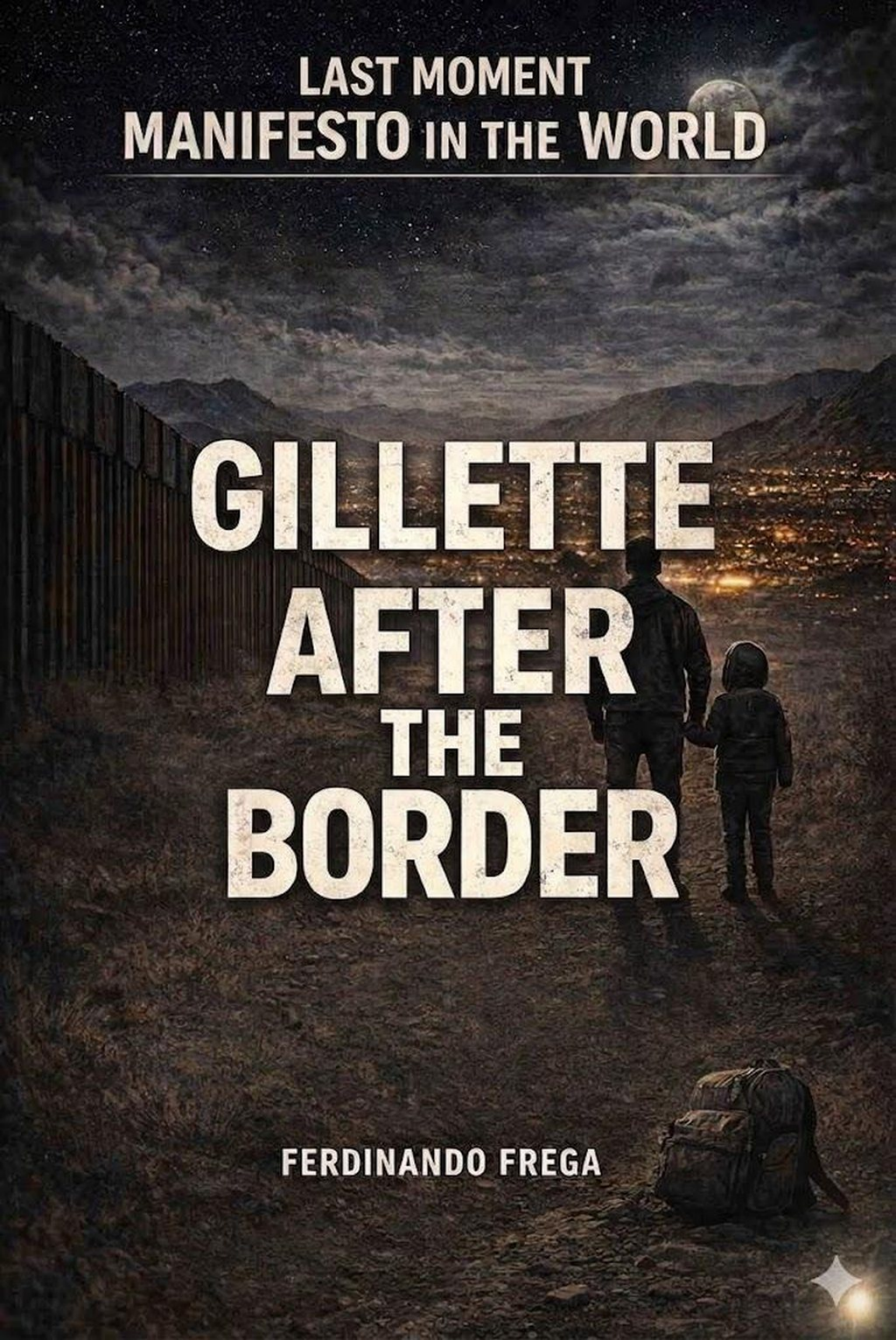
LAST MOMENT
MANIFESTO IN THE WORLD

GILLETTE AFTER THE BORDER



FERDINANDO FREGA

GILLETTE सीमा के बाद

दीवारों के बजाय दहलीज़ के रूप में सीमाओं पर एक पुस्तक: लोग, संस्कृतियाँ, परंपराएँ और पागलपन व दृष्टि के बीच की पतली रेखा। इसमें एक घोषणापत्र है, सीमाओं के यात्रियों को एक समर्पण, एक छोटी जीवनी, और एक प्रश्न जिस पर लेखक बार-बार लौटता है — किनारा पार कर लेने के बाद किसी व्यक्ति में क्या बचता है।

घोषणापत्र

अधिकांश लोग यह नहीं समझते कि जीवन इस बात से परिभाषित नहीं होता कि हमारे पास क्या है, बल्कि उस उपस्थिति से होता है जो हम दूसरों में छोड़ जाते हैं। हम यहाँ केवल संचय करने के लिए नहीं हैं। हम यहाँ एक विचार को तराशने, एक पीड़ा को कम करने, एक चेतना को जगाने के लिए हैं।

मानवीय सीमा केवल राज्यों के बीच की रेखा नहीं है। यह उन लोगों के बीच की दूरी है जो अपना समय खर्च कर देते हैं और उन लोगों के बीच जो उसे भीतरी विरासत में बदल देते हैं।

सीमा के पार कोई शून्य नहीं है। वहाँ वह है जो बचा रहता है। वहाँ वह है जो शरीर, भूगोल और भय से परे जीवित रहता है। वहाँ निशान है।

समर्पण

उनके नाम जो दृश्य और अदृश्य सीमाएँ पार करते हैं। उनके नाम जो धरती, भाषा, नाम खो देते हैं — और फिर भी दुनिया में अस्तित्व का कोई रास्ता खोजते रहते हैं।

संपादकीय टिप्पणी

यह पाठ एक सरल, आमूल प्रश्न से जन्मा: वह क्या है जिसे हम, मनुष्य होकर, अब भी नहीं समझते? उत्तर एक नया क्षेत्र खोलता है: हम यहाँ

केवल अस्तित्व में रहने के लिए नहीं हैं, बल्कि दूसरों में एक जीवित निशान छोड़ने के लिए हैं।

आधार

हर सीमा कुछ न कुछ बाँटती है: शरीर, नक़्शे, स्मृतियाँ, अधिकार, संभावनाएँ। पर सबसे गहरी सीमा उसे अलग करती है जो बीत जाता है उससे जो बचा रहता है।

प्रस्तावना

यह पाठ बंदिश के रूप में सीमाओं के बारे में नहीं, बल्कि दहलीज़ के रूप में सीमाओं के बारे में है। मानवता ने भू-भाग, राष्ट्र, सुरक्षा-दीवारें बनाई हैं — फिर भी वह अब तक नहीं समझ पाई कि उसका सच्चा माप वह नहीं जो उसके पास है, बल्कि वह है जो वह आगे सौंपती है।

सारांश

मानवीय और भौगोलिक सीमाओं पर, और उन्हें पार करने के बाद जो बचा रहता है उस पर एक घोषणापत्र: स्मृति, रूपांतरण, उपस्थिति।

लेखक का उद्देश्य

मैं कुछ ऐसा छोड़ने के लिए लिखता हूँ जो स्वामित्व नहीं, बल्कि टिकाव माँगता है। एक मुस्कान, एक विचार, निकटता का एक ऐसा रूप जो पन्ने के पार भी चलता रहे।

भूमिका

अधिकांश लोग, किसी प्रश्न का सामना होते ही, उत्तर खोजने दौड़ पड़ते हैं। मैं नहीं। मैं एक ही शब्द से शुरू करता हूँ: क्यों?

क्योंकि मुझे संवाद में अपेक्षित ढंग से प्रवेश करने में रुचि नहीं है। मैं वह दरार खोलना चाहता हूँ जिससे संवाद जन्म लेता है। मुझे वह बिंदु चाहिए जहाँ मनुष्य दोहराना बंद करता है और सचमुच प्रश्न करना शुरू करता है।

यह नहीं कि हम क्या नहीं समझ पाते — बल्कि यह कि हम बार-बार क्यों असफल होते हैं। हम स्वामित्व को अर्थ क्यों समझ बैठते हैं। हम समय में निशान छोड़ने में सक्षम उपस्थितियों के बजाय जीवन के उपभोक्ताओं की तरह क्यों चलते हैं। हम अपने बाहर सीमाएँ क्यों बनाते हैं और उन सीमाओं को अनदेखा क्यों करते हैं जो हमें भीतर से बाँटती हैं। यह घोषणापत्र यहीं से शुरू होता है। किसी तैयार उत्तर से नहीं, बल्कि एक तात्कालिकता से। किसी सूत्र से नहीं, बल्कि एक दहलीज़ से।

पहला प्रश्न कोई पक्ष नहीं माँगता। वह स्वयं को खोलना माँगता है। वह हमसे उस बिंदु तक उतरने को कहता है जहाँ भाषा सतह होना छोड़ देती है और फिर से आवश्यकता बन जाती है।

इसीलिए मैं तुरंत उत्तर नहीं देता। पहले मैं उद्गम के सामने खड़ा होता हूँ। पहले मैं घाव को सुनता हूँ। पहले मैं वह एकमात्र शब्द बोलता हूँ जो अब भी चिंतन को खोल सकता है: क्यों।

इसी दरार से पाठ शुरू होता है। यहीं से यह मानवीय, भौगोलिक और आंतरिक सीमाओं पर एक चिंतन बनता है। यहीं से उस ओर का रास्ता खुलता है जो बाद में आता है: शून्य नहीं, बल्कि शेष; अंत नहीं, बल्कि निशान; समापन नहीं, बल्कि वह जो जीवित रहता है।

यह घोषणापत्र उस जगह में प्रवेश करता है जहाँ उत्तर अब पर्याप्त नहीं रहते — और ठीक उस बिंदु से शुरू होता है जहाँ मनुष्य बिना किसी आश्रय के स्वयं को देखने के लिए विवश होता है।

प्रारंभ

हिन्दी संस्करण

यह घोषणापत्र मानवीय, भौगोलिक और आंतरिक सीमाओं के अर्थ की पड़ताल करता है, और केवल भौतिक अस्तित्व से आगे, उपस्थिति के महत्व पर और उस निशान पर बल देता है जो हम दूसरों में छोड़ जाते हैं।

सीमाओं के यात्रियों को समर्पण

यह उन्हें समर्पित है जो दृश्य और अदृश्य सीमाएँ पार करते हैं, धरती, भाषा या नाम खो देते हैं, फिर भी दुनिया में अस्तित्व का कोई रास्ता खोजते रहते हैं।

मूल प्रश्न

लेखक एक आमूल प्रश्न से शुरू करता है कि हम अब भी क्या नहीं समझते, और यह कहता है कि हम यहाँ केवल अस्तित्व में रहने के लिए नहीं, बल्कि दूसरों में एक जीवित निशान छोड़ने के लिए हैं।

सीमाओं की प्रकृति

सीमाएँ शरीरों, नक़्शों, स्मृतियों, अधिकारों और संभावनाओं को बाँटती हैं — पर सबसे गहरी सीमा वह है जो बीत जाने वाले और बचे रहने वाले के बीच है।

दहलीज़ के रूप में सीमाएँ

सीमाएँ बंदिशें नहीं, दहलीज़ें हैं। मानवता का सच्चा माप इसमें है कि हम क्या आगे भेजते हैं, इसमें नहीं कि हमारे पास क्या है।

मानवीय सीमा पर एक घोषणापत्र

जीवन इस बात से परिभाषित नहीं होता कि किसी के पास क्या है, बल्कि उस उपस्थिति से होता है जो वह दूसरों में छोड़ जाता है। मानवीय सीमा

उन लोगों के बीच की दूरी है जो केवल समय का उपभोग करते हैं और उन लोगों के बीच जो उसे भीतरी विरासत में बदल देते हैं।

लोग और संस्कृतियाँ

लोग जीवित स्मृतियाँ हैं जो प्रतिरोध करती हैं और मान्यता माँगती हैं, जबकि संस्कृतियाँ भावनाओं की वर्णमालाएँ हैं — विस्मृति के विरुद्ध प्रतिरोध के कार्य।

परंपराएँ और सामाजिकता

परंपराएँ देहधारी निरंतरताएँ हैं जो समय के आगे टिकी रहती हैं। सामाजिकता पहली मानवीय सीमा है, वह स्थान जहाँ परस्पर मान्यता से पहचान बनती है।

पागलपन और दृष्टि के बीच की सीमा

जो विचार की सीमाएँ पार करते हैं, उन्हें मरीज़ भी समझा जा सकता है और पैग़ंबर भी; पागलपन और दृष्टि के बीच की रेखा पतली है, जो अक्सर सुनने के डर से खींची जाती है।

बिना अधिकार जमाए देना

लेखक कहता है कि वह बदले में कुछ अपेक्षा किए बिना देता है, और मानवीय तर्क को व्यावसायिक तर्क से अलग करता है। घोषणापत्र एक मार्ग है — ऐसा मार्ग जो पन्ने के पार भी चलता रहता है।

दुनिया

लोग

दुनिया के लोग गिनी जाने वाली भीड़ नहीं, बल्कि गतिशील जीवित स्मृतियाँ हैं। हर व्यक्ति एक घाव है जो साँस लेता रहता है, एक भाषा जो वश में होने से इनकार करती है, एक भूख जिसे केवल रोटी शांत नहीं कर सकती, एक आकाश जिसे किसी झंडे में तह नहीं किया जा सकता।

लोग आगे नहीं बढ़ते — वे टिके रहते हैं। वे समझे जाने की माँग नहीं करते, बल्कि पहचाने जाने की। हर जन-समुदाय जीवित बचे रहने का एक अभिलेखागार है, सब कुछ ढह जाने पर भी जीवित रहने का एक अनूठा तरीक़ा।

कोई भी जन-समुदाय हाशिए पर नहीं है। हाशिया बस वह जगह है जिसे देखना दुनिया ने अभी तक नहीं सीखा।

संस्कृतियाँ

संस्कृतियाँ मानवता को बाँटती नहीं — वे उसे पठनीय बनाती हैं। वे भावनाओं की वर्णमालाएँ हैं, पीड़ा के नक़्शे हैं, उत्सव की नृत्य-रचनाएँ हैं, वापसी की ज्यामितियाँ हैं।

हर संस्कृति अर्थ की एक प्रयोगशाला है, जीवित होने की पहेली को आकार देने का एक प्रयास। बचाव करने वाली पहचानें नहीं, बल्कि पार करने वाले तनाव।

हर संस्कृति यहाँ, अभी, इस शरीर में होने के रहस्य का एक अस्थायी उत्तर है। और हर उत्तर विस्मृति के विरुद्ध प्रतिरोध का एक कार्य है।

परंपराएँ

परंपराएँ वह हैं जो समय के क्षरण का प्रतिरोध करती हैं। वे अतीत-मोह नहीं हैं — वे देहधारी निरंतरता हैं।

दोहराया गया इशारा आदत नहीं है: वह स्मृति का आग्रह है। आगे सौंपा गया शब्द लोककथा नहीं है: वह अपनापन है। साझा भोजन की मेज़ एक संधि है। साझा शोक न्याय का एक रूप है।

परंपराएँ वह अतीत हैं जो मरने से इनकार करता है — जो हर बार लौटकर हमें याद दिलाता है कि जब कोई देख नहीं रहा होता, तब हम कौन होते हैं।

सामाजिकता

सामाजिकता वह पहली सीमा है जिसे मनुष्य पार करता है। बोलने से पहले हम छूते हैं। समझने से पहले हम देखते हैं।

हम संबंध हैं, घर्षण हैं, पहचाने जाने की आवश्यकता हैं। किसी दूसरे के सामने मौन भी एक भाषा है। सामाजिकता वह स्थान है जहाँ मेरे और दूसरे के बीच की सीमा में दरार पड़ती है — और होने की संभावना शुरू होती है। साक्षी के बिना कोई पहचान नहीं।

एक छोटी जीवनी

मैं ऐसे लेखन से आता हूँ जिसने कभी सभागार नहीं खोजे, बल्कि उपस्थिति खोजी। मैंने विचार, घाव, ज़िद और स्पष्टता के वर्ष पार किए हैं। मैंने कभी जगह घेरने के लिए नहीं लिखा — मैंने इसलिए लिखा ताकि मैं लुप्त न हो जाऊँ। हर शब्द एक दहलीज़ रहा है, हर पुस्तक एक साक्षी, हर इशारा प्रतिरोध का एक कार्य। मेरी जीवनी कोई बायोडाटा नहीं — वह एक प्रक्षेप-पथ है। मैं पाठक नहीं खोजता — मैं साक्षी खोजता हूँ।

उद्देश्य

(सीमाओं की खोज)

दुनिया के किनारे को छूना

मेरा लक्ष्य दुनिया का वर्णन करना नहीं, बल्कि उसकी सीमाओं को छूना है।

सीमा की परीक्षा के रूप में लेखन

लेखन सीमा की एक परीक्षा है: कहने के लिए नहीं, बल्कि यह देखने के लिए कि सब कुछ कह दिए जाने के बाद क्या बचा रहता है।

उत्तरी ध्रुव

उत्तरी ध्रुव भौगोलिक कल्पना की अंतिम सीमा है: बर्फ़, मौन, अनुपस्थिति, प्रतिरोध। यह वह स्थान है जहाँ दुनिया समाप्त होती लगती है — और

इसके बजाय, किसी दूसरे रूप में फिर से शुरू होती है। हर घोषणापत्र को अपने असंभव उत्तर की ज़रूरत होती है। गंतव्य के रूप में नहीं, बल्कि एक तनाव के रूप में।

उत्तरी ध्रुव इस बात का प्रमाण है कि शून्य में भी बसा जा सकता है, यदि उसे स्पष्टता से पार किया जाए। यह वह बिंदु है जहाँ नक़्शा भौगोलिक होना छोड़कर नियति बन जाता है।

पशु

पशु वह सीमा हैं जो हमें विनम्र भी बनाती है और पूर्ण भी। वे जीवित प्राणियों के एक दूसरे व्याकरण से हमें देखते हैं। वे बोलते नहीं — वे कहते हैं। वे समझाते नहीं — वे दिखाते हैं।

वे दुनिया की जैविक स्मृति हैं, इस बात का प्रमाण कि हम केंद्र नहीं, बल्कि एक पड़ाव हैं। हर पशु एक ऐसा प्रश्न है जिसे उत्तर की नहीं — केवल उपस्थिति की आवश्यकता है। वे अर्थ नहीं खोजते — वे उसे जीते हैं।

मनोचिकित्सक या केस स्टडी?

यह रहा अंतिम प्रश्न: दृष्टि या विचलन? भविष्यवाणी या लक्षण?

जो विचार को सीमा के पार धकेलते हैं, उन्हें अक्सर एक आवाज़ के रूप में सुने जाने से पहले एक मरीज़ के रूप में पढ़ा जाता है। हर नई भाषा को, कम से कम एक बार, निदान के संदेह से गुज़रना पड़ता है।

पागलपन और दृष्टि के बीच की सीमा पतली है — और अक्सर उन्हीं के द्वारा तय होती है जो सुनने से डरते हैं।

मैं निदान नहीं माँगता — मैं ध्यान माँगता हूँ। मैं सामान्यता नहीं खोजता — मैं सत्य खोजता हूँ।

लेखक की टिप्पणी

अपने पूरे जीवन में मुझे देने में ही आनंद मिला है, लेने में कभी नहीं। इकसठ वर्षों से यही मेरा एकमात्र स्थायी गुण रहा है: देना, थामे रखना नहीं। और यहाँ भी, मैं केवल स्वयं बना रह सकता था — कुछ ऐसा छोड़ते हुए जो लोगों के मन में रहे, मेरी जेबों में नहीं।

वैश्विक प्रकाशन उद्योग की एक अजीब धारणा है: कि जो मुफ़्त दिया जाता है उसका मूल्य कम ही होगा। कि उपहार में दी गई पुस्तक कम मूल्य की पुस्तक है।

यह व्यापार का तर्क है — मानवीय तर्क नहीं। उस तर्क से तो Bezos को निजी जेट के बजाय बस में सफ़र करना चाहिए। हाहाहाहा। इतना बेतुका है यह।

मैं उलटा करता हूँ। मैं वह देता हूँ जो मेरे पास देने को है — वह नहीं जो मैं पाने की आशा करता हूँ।

यह अंतर छोटा लगता है, पर है नहीं। यह वह रेखा है जो स्वामित्व को उपस्थिति से, हिसाब-किताब को उदारता से, बाज़ार को निशान से अलग करती है।

यह घोषणापत्र कोई उत्पाद नहीं — यह एक मार्ग है। एक ऐसा इशारा जो बदले में कुछ नहीं माँगता। मेरा एक टुकड़ा जो तब भी चलता रहता है जब मैं स्वयं नहीं चल पाता।

धन्यवाद। और आनंद लीजिए — इस शब्द के सबसे गंभीर और सबसे हल्के, दोनों अर्थों में।

समापन

असली सीमा धरती का अंत नहीं है। यह वह क्षण है जब हम तय करते हैं कि बिना कुछ छोड़े गुज़र जाएँ — या उपस्थिति बन जाएँ।

Ferdinando Frega